पद २७८

(राग: झिंजोटी - ताल: धुमाळी)

मय्या मोहे शाम देवत गारी। मोहे झडकके चुनरी फारी रे।।ध्रु.।। दिध तेरो खायो माखन खायो। ईने दिधकी मथनिया फोरी रे।।१।। मानिकके प्रभु नाथ कृष्णजी। तोहे चरनन जाऊं बलिहारी।।२।।